

स्वावलम्बन

गर्विता

स्वावलम्बन शब्द (स्व + अवलम्बन) शब्दों के योग से बना है। स्व का अर्थ है - अपना तथा अवलम्बन का अर्थ है - सहारा। बिना किसी दूसरे की सहायता की अपेक्षा रखे अपने ही भरोसे पर काम करने का नाम स्वावलम्बन है। इसी को आत्मनिर्भरता भी कहते हैं। आत्म विश्वास के बल पर कार्य को निरन्तर गति देना स्वावलम्बन है। निज, समाज तथा राष्ट्र की आवश्यकताओं की पूर्ति की क्षमता उत्पन्न करना स्वावलम्बन है। व्यक्ति समाज तथा राष्ट्र में आत्म-विश्वास की भावना स्वावलम्बन की प्रतीक है। स्वावलम्बन जीवन के लिए परमावश्यक है। यह होनहार मनुष्य का लक्षण है, यह उन्नति का मूल है। बड़प्पन का साधन है और सुखमय जीवन का स्रोत है। स्वावलम्बी व्यक्ति या राष्ट्र ही स्वतंत्र रह सकता है। जो देश या व्यक्ति दूसरों का मुँह ताकते हो, वे स्वतंत्र नहीं रह सकते हैं। यह शारीरिक तथा आध्यात्मिक उन्नति का साधन है। गीता का कर्मयोग स्वावलम्बन के रूप में ही क्रियान्वित होता है। अंग्रेजी की प्रसिद्ध कहावत "God help those who help themselves" व्यक्ति को स्वावलम्बी होना सिखाती है।

वस्तुतः जीवन में सफलता पाने के लिए सबसे प्रमुख तत्व स्वावलम्बन ही है। जिस व्यक्ति में आत्मनिर्भरता की भावना होती है, वहीं समस्त कार्यों को सरलता से कर पाता है। कर्तव्य-मार्ग में आने वाली विघ्न-बाधाओं का सामना करने का साहस स्वावलम्बी व्यक्ति को ही होता है। उसी में दृढ़ इच्छा शक्ति और आत्म-विश्वास की भावना होती है। ज्ञान, विज्ञान, कला-कौशल, व्यापार, राजनीति, नौकरी आदि सभी क्षेत्रों में वे ही व्यक्ति आगे बढ़ पाते हैं जो स्वावलम्बी हो। स्वावलम्बियों के लिए जीवन में कुछ भी असम्भव नहीं। एक साधारण सैनिक से जीवन आरम्भ कर एक दिन फ्राँस में सर्वेसर्वा बनने वाला नेपोलियन कहा करता था कि असम्भव शब्द मूर्खों के कोष में होता है। संसार में धन, विद्या मान, गौरव, आदि की प्राप्ति स्वावलम्बी ही कर सकता है। सूर्य अपने प्रकाश से अंधकार को दूर करता है, सबको गर्मी देता है, वह इसके लिए किसी अन्य का आश्रय नहीं लेता। वह अपने ही सामर्थ्य से सब कुछ करता है। अतः उसमें कोई परिवर्तन नहीं होता, इसके विपरीत चन्द्रमा अपने प्रकाश के लिए सूर्य पर निर्भर रहता है, इसलिए सदा घटता-बढ़ता रहता है।

सफलता रूपी मोती उसी के हाथ लगते हैं, जो स्वावलम्बी है और कर्म रूपी समुद्र में डुबकी लगाता है। कहा भी है -

जिन ढूँढा तिन पाइयाँ गहरे पानी पैठ।

मैं बावंरी बूडन डरी रही किनारे बैठ।

स्वावलम्बी व्यक्ति, समाज, राष्ट्र के जीवन में संवागीण सफलता -प्राप्ति का महातंत्र है। जीवन का आभूषण है। कर्तव्य श्रंखला की प्रथम कड़ी है। वीरों तथा कर्मयोगियों का इष्टदेव है। संवागीण उन्नति का आधार है।

जो व्यक्ति काम के लिए दूसरों पर निर्भर रहते हैं, या अन्यो का आश्रय ग्रहण करते हैं, वे जीवन में सफल नहीं हो सकते। दूसरों की सहायता की प्रतीक्षा में वे अपनी शक्ति, अपना समय और धन नष्ट कर देते हैं। परावलम्बी व्यक्ति में स्वयं कुछ भी करने की सामर्थ्य शेष नहीं रह जाती। वह अपने को सब प्रकार से अयोग्य समझकर प्रतीक्षण दूसरों का मुँह ताकता रहता है। इस कारण

वह जीवन की दौड़ में पिछड़ जाता है। वह निरुद्यमी और आलसी हो जाता है। नगरों में आधे घण्टे के पैदल मार्ग को तय करने के लिए लोग घण्टों तक बस की प्रतीक्षा में खड़े रह जाते हैं, पाँवों को कष्ट देने से घबराते हैं। वस्तुतः परावलम्बन बहुत बड़ा दोष है। यह आलस्य का ही दूसरा रूप है और आलस्य शरीर में स्थित मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु है। “आलस्य ही मनुष्याणां शरीर महारिपुः।

स्वावलम्बन का गुण प्रत्येक परिस्थिति में लाभकारी होता है। स्वावलम्बी व्यक्ति आत्मविश्वास के कारण उन्नति कर सकता है। उसमें स्वयं काम करने एवं सोचने विचारने की सामर्थ्य होती है। वह किसी काम को करने के लिए किसी के सहारे की प्रतीक्षा नहीं करता है। वह अकेला ही कार्य करने के लिए आगे बढ़ता है। उसे अपना काम करने में सच्चा आनंद मिलता है। विघ्न-बाधाएँ स्वावलम्बियों के मार्ग को अवरूद्ध नहीं कर पाती हैं। महापुरुषों ने स्वावलम्बन के कारण ही उन्नति की है। स्वावलम्बी की सभी प्रशंसा करते हैं। उसे यश और गौरव की प्राप्ति होती है। एक नीतिकार का यह कथन “स्वावलम्बन की एक झलक पर न्यौछावर कुबेर का कोष “अक्षरशः सत्य है। वास्तव में जिसके पास स्वावलम्बन जैसा अद्भुत रत्न है, उसे फिर किसी धन दौलत की आवश्यकता नहीं। संसार के सारे वैभव, समस्त ऐश्वर्य स्वावलम्बन की सम्पदा के सामने तुच्छ हैं। इस मानव संसार में जीवन की सच्ची सफलता के लिए स्वावलम्बन ही सबसे बड़ी शक्ति है। इस दिव्य शक्ति के सम्मुख दुर्भाग्य भी घुटने टेक देता है। कठिनाईयों के पर्वत चूर-चूर हो जाते हैं। कोई चिन्ता नहीं यदि कठिनाईयों के चौमुखी तूफानों के बीच आप धिरे हैं, निराशा के अंधकार से आपका जीवन भर गया है, कोई संगी साथी भी आपके पास नहीं है, बस स्वावलम्बन के मंत्र को अपने जीवन में साथ लीजिए, सफलता आपके चरण चूमेंगी। दुर्लभ से दुर्लभ कार्य भी आपके लिए सहज बन जायेंगे इसलिए तो महात्मा बुद्ध ने अज्ञानी मानव समाज को जगाते हुए कहा था - “स्वयं की अपनी परीक्षा कर अपने आप को उठा। इस प्रकार तू विचारशील बन और अपनी रक्षा स्वयं करता हुआ दुनियाँ में सुखपूर्वक विहार कर “

स्वावलम्बी व्यक्ति स्वतंत्र होता है। उसका अपने पर अधिकार होता है। वह बड़े-बड़े राजा-महाराजाओं की भी परवाह नहीं करता है।

स्वावलम्बी सबके साथ विनम्रता का व्यवहार करके अपने काम में सलंग्न रहता है। उस पर चाहे कितनी भी विपत्ति आ जाये, वह कभी काम करने से पीछे नहीं हटता। किसी भी बाधा के सामने वह हार नहीं मानता है। हमेशा अपने कार्य में सफल होता है। स्वावलम्बी सरलता का व्यवहार करता है, किसी के साथ छल-कपट नहीं करता है। वह त्यागी एवं सेवाभावी होता है। उसमें लालच नहीं होता है। वह भाग्य के आश्रित नहीं बैठ जाता, अपितु अपने भाग्य का स्वयं निर्माता होता है। जीवन के प्रारम्भिक काल में शिशु हाथों का उपयोग नहीं जानता। माँ पर आश्रित रहता है। ज्यों ही उसे हाथ की उपयोगिता पता लगी, वह कोई भी वस्तु उठाकर मुँह में डालने लगता है। मुँह और हाथ देने का प्रभु का तात्पर्य यह है - स्वावलम्बी बनो। अपना काम अपने हाथ से करो। अपने हाथ की कमाई खाओ। आत्म-निर्भर बनकर हार्दिक आनंद की प्राप्ति करो। चींटी जैसा नन्हा सा जीव का बच्चा भी स्वावलम्बन का महत्व समझता है। इसी से प्रेरित होकर एक शायर का हृदय परमुखापेक्षी मानव समाज तथा राष्ट्र की मूर्खता पर रो उठा।

जो हुआ मोहताज गैरों को, वो कब इन्सान हे ।
वो है हैवानों से बदतर, चूंकि वो नादान है ।

संसार के सभी महापुरुष स्वावलम्बन के कारण ही महान बने हैं । स्वावलम्बन के कारण ही सावित्री ने सत्यवान को यमराज से छुड़ाया था । पार्वती जी ने स्वयं तपस्या करके शिवाजी को अपनी ओर आकृष्ट किया था । राम ने वन-वन भटक कर ही लंका पर विजय प्राप्त की थी । छत्रपति शिवाजी ने थोड़े से मराठों को एकत्र कर हिंदुओं की रक्षा की थी । राजस्थानी में एक कहावत है । “ काम सुधारों तो आगे पधारो । “ अर्थात् -यदि अपनाकाम सुधारना है, तो किसी के अधीन न रहकर उसे स्वयं करो । दूसरे शब्दों में “स्वावलम्बी बनो । “भगवान कृष्ण ने गीता में कहा है - ‘ स्वे-स्वे कर्मण्यभिरतः संसिद्धिं लभते नरः । ‘ जो स्वावलम्बी व्यक्ति अपने कर्म के पालन में निमग्न रहता है, उसे ही सिद्धि (सफलता) प्राप्त होती है । कहावत प्रसिद्ध है - “आप काज महाकाज निपट “ दरिद्र बालक लाल बहादुर शास्त्री भारत के प्रधानमंत्री बने, दीन-हीन जैलसिंह स्वावलम्बन के सहारे ही भारत के राष्ट्रपति बने ।

स्वावलम्बन का गुण वैसे तो किसी भी आयु में हो सकता है , परन्तु बालकों में यह शीघ्र उत्पन्न किया जा सकता है । उन्हें ऐसी परिस्थिति में डालकर जहाँ कोई सहारा देने वाला न हो, स्वावलम्बन का पाठ सिखाया जा सकता है । यह शिक्षा बालकों को घर पर दी जा सकती है । आजकल स्वावलम्बन की विशेष आवश्यकता है । यदि हर मनुष्य में स्वावलम्बन का भाव भर जायें तो अकाल, बीमारी, दंगे, युद्ध आदि हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकते हैं । प्रकृति से भी हमें स्वावलम्बन की शिक्षा मिलती है । स्वावलम्बन के महत्व से अपरिचित, अतः दूसरों का मुँह ताकने वाले अपने कर्तव्य का पालन नहीं कर पाते । ऐसे लोग मोह को बढ़ाकर, तृष्णा को उत्पन्न कर अपनी दयनीय स्थिति बना लेते हैं । स्वावलम्बी को ही प्रभु का वरदान प्राप्त होता है । आत्म-निर्भरता स्वावलम्बियों की आराध्य देवी है । देवी की उपासना से उनका आलस्य अंतर्धान हो जाता है, भय-भयभीत होकर भाग जाता है , कायरता नष्ट हो जाती है , आत्म-विश्वास उत्पन्न हो जाता है । टाटा, बिरला, सिंघानिया, डालमियाँ, खेतान, मोदी न जाने कितने स्वावलम्बियों ने राष्ट्र को आद्योगिक सम्पन्नता प्रदान कर विश्व प्रॉगण में भारत का नाम ऊँचा किया । चन्द्रमा, मंगल लोक भी वैज्ञानिकों से पवित्र हो चुका है । ऐसे दुस्साहसी स्वावलम्बियों से भयभीत होकर विधाता पूछ लेता है - बता तेरा रंज क्या है ? डॉ० इकबाल ने इस तथ्य को प्रस्तुत किया -

खुदी को कर बुलंद इतना, कि हर तकदीर से पहले ।

खुदा बंदे से यह पूछे, बता तेरी रजा क्या है ?

स्वावलम्बी व्यक्ति फ़ष्टों व बाधाओं को रौंदता हुआ कंटककीर्ण पथ पर निर्भीकतापूर्वक आगे बढ़ता है ।

पर्वतों को काटकर सड़के बना देते हैं वे,

सैकड़ों मरुभूमि में नदियाँ बहा देते हैं वे ।

आज जो करना है कर देते हैं उसको आज ही

सोचते, कहते हैं, जो कुछ कर दिखाते हैं वहीं । (हरिऔध)